साक्षर भारत

मूल्य : एक प्रति ` 0.50
वार्षिक ` 5.00

नेशनल बुक ट्रस्ट साक्षरता संवाद

साक्षरताकर्मियों के लिए

मार्च 2013 वर्ष 18, अंक 3

संदर्भ : अंतरराष्ट्रीय महिला दिवस, 8 मार्च

हौसलों से उड़ान होती है

अबला नहीं अब नारी
बेटी
भरे उड़ान
आकाश में, युद्ध में
करे कमाल।

एक कसबाई कवि सुगन चंद्र जैन नलिन (गुना, म.प्र.) की इन पंक्तियों के गहरे निहितार्थ हैं। माँ, बहन, बेटी–जो भी कह लें, एक स्त्री आज सचमुच अंतरिक्ष की ऊँचाई तक जा पहुँची है। वैश्विक संदर्भ में शिखर पर पहुँची महिलाओं की तादाद कितनी होगी इसे हम केवल भारत के संदर्भ से ही मापें तो अचंभित रह जाएँगे। कल्पना चावला और सुनीता विलियम्स ने जहाँ अंतरिक्ष का भ्रमण किया, वहीं बचेंद्री पाल ने एवरेस्ट के शिखर को चूमा। इंदिरा गाँधी प्रधानमंत्री बनीं तो आज कितने ही राज्यों में महिला मुख्यमंत्री हैं। खेल हो, उद्योग हो, व्यापार या तकनीक हो; फिल्म, साहित्य या थिएटर हो–महिलाओं ने हर क्षेत्र में अपनी प्रतिभा के झंडे गाड़े हैं।

गीत गाने लगीं लड़कियाँ, घर सजाने लगीं लड़कियाँ / कुछ नए चित्र आकाश पर, लो, बनाने लगीं लड़कियाँ / रूढ़ियाँ ताकती रह गईं, सर उठाने लगीं लड़कियाँ / अब तो जलते हुए सूर्य के, पास जाने लगीं लड़कियाँ / वक्त को मोड़ने के लिए, कसमसाने लगीं लड़कियाँ।

जी हाँ, नारी अब अबला नहीं रहीं, न ही केवल श्रद्धा, जैसा कि महाकवि जयशंकर प्रसाद ने कभी कहा था :

पृ. सं. 2 पर जारी ...

स्त्रियों के साथ अनेक तथा गंभीर समस्याएँ हैं, किंतु किसी का भी समाधान जादुई शब्द 'शिक्षा' के बिना संभव नहीं।

–स्वामी विवेकानंद

तू चुप रहकर जो सहती रही,
तो क्या ये जमाना बदलेगा
तू बोलेगी, मुँह खोलेगी
तब ही तो जमाना बदलेगा!

संदर्भ : पुण्यतिथि, 1 मार्च

सोहनलाल द्विवेदी : नवजागरण के कवि

ज. : 22 फरवरी, 1906
नि. : 1 मार्च, 1988

राष्ट्रीय नवजागरण के उत्प्रेरक कवियों में एक थे सोहनलाल द्विवेदी। काशी हिंदू विश्वविद्यालय से शिक्षित श्री द्विवेदी देश में बाल साहित्य के भी महान आचार्य थे। उनकी अनेक काव्य कृतियाँ प्रकाशित हैं। 1969 में उन्हें पद्मश्री से सम्मानित किया गया। द्विवेदी जी की एक प्रसिद्ध कविता स्मरणस्वरूप प्रस्तुत :

एक स्वर मेरा मिला लो

वंदना के इन स्वरों में
एक स्वर मेरा मिला लो!

राग में जब मत्त झूलो
तो कभी माँ को न भूलो
अर्चना के रत्नकण में
एक कण मेरा मिला लो!

जब हृदय का तार बोले
शृंखला के बंद खोले
हों जहाँ बलि शीश अगणित
एक सिर मेरा मिला लो!

वंदना के इन स्वरों में
एक स्वर मेरा मिला लो!

होली का, उल्हास किताबें
फूलों का, मधुमास किताबें
अबीर, गुलाल, सभी इसी में
रंगों का, इतिहास किताबें।

आनंद बिल्थरे, बालाघाट, म.प्र.

नारी, तुम केवल श्रद्धा हो, विश्वास रजत नग-पदतल में / पीयूष स्रोत-सी बहा करो, जीवन के सुंदर समतल में। दरअसल, जीवन के हर क्षेत्र में ऊँचे मुकाम हासिल कर रही हैं महिलाएँ। साक्षरता के लिए मिल रहे अवसर का आज महिलाएँ भरपूर लाभ उठा रही हैं। 'साक्षर भारत' अभियान से उनके अरमानों को पंख लग गए हैं और जैसा कि किसी शायर ने कहा है : मंजिलें उनको मिलती हैं जिनके सपनों में जान होती है, पंखों से कुछ नहीं होता, हौसलों से उड़ान होती है। तो आज महिलाओं के अरमानों को पंख ही नहीं लगे उनमें जबरदस्त हौसला भी पनपा है। और इसी हौसले ने उनमें एक नया जोश, एक नया जुनून, एक नया जज्बा भरा है।

एक सर्वेक्षण में बताया गया था कि विश्व भर की महिलाएँ पुरुषों की तुलना में अधिक काम करती हैं। यह बात अलग है कि उनके श्रम का मूल्य आज भी पुरुषों से कम आँका जाता है। लेकिन पुरुषों के समान उन्हें भी वही अधिकार मिलें इसकी लड़ाई आम महिलाओं द्वारा ही लड़ी गई थी। प्राचीन ग्रीस में लीसिसट्राटा नाम की एक महिला ने इस लड़ाई की शुरुआत की थी। आधुनिक समय में, 1909 का वर्ष महिला आंदोलन के क्षेत्र में बेहद महत्वपूर्ण है जब अमेरिका में महिला दिवस (28 फरवरी को) मनाया गया। लेकिन अंतरराष्ट्रीय महिला दिवस का विचार 1911 में कोपेनहेगेन में, कामकाजी महिलाओं के सम्मेलन में जर्मन सोशल डेमोक्रेटिक पार्टी की क्लारा जेटकिन ने रखा था। तदनुसार, 19 मार्च को यूरोप के चार देशों में अंतरराष्ट्रीय महिला दिवस मनाया भी गया। लेकिन 8 मार्च की तिथि, अंतरराष्ट्रीय महिला दिवस मनाने हेतु, 1913 में तय की गई, जिसे बाद में संयुक्त राष्ट्र ने मान्यता दे दी। इस लिहाज से यह वर्ष, यानी 2013, 8 मार्च को महिला दिवस मनाने की अवधारणा का सौवाँ वर्ष है, जबकि तकनीकी तौर पर 102वाँ वर्ष।

राजनीतिक लड़ाई लड़ने से पहले, दुनिया के हर हिस्से में, सामाजिक लड़ाई लड़नी पड़ती है; और इतिहास गवाह है कि महिलाएँ यह लड़ाई लड़ने में पीछे नहीं रहीं। आधुनिक समय में फ्रांस की क्रांति (1789) के बाद 1917 की रूसी क्रांति में भी महिलाओं की भूमिका निर्णायक रही थी। सन् 1917 में रोटी और शांति के लिए आंदोलन ने जार को गद्दी छोड़ने पर मजबूर किया था। अंत में, 1959 में श्रीलंका में एक महिला, सिरीमाओ भंडारनायके, का देश का प्रधानमंत्री बनना एक स्त्री की राजनीतिक लड़ाई का शिखर साबित हुआ। तबसे दुनिया की नदियों में बहुत सारा पानी बह चुका है। स्त्री-उभार का समय है यह।

संदर्भ : परिनिर्वाण दिवस, 10 मार्च

सावित्रीबाई फुले : स्त्री-शिक्षा की पुरोधा

सावित्रीबाई फुले को भारतीय समाज, खासकर महिलाएँ, कभी नहीं भूल सकतीं। वे भारत की पहली महिला शिक्षिका हैं। महाराष्ट्र के सतारा जिले में एक दलित परिवार में जन्म लेकर (1831) भी उनके मन में स्त्री-शिक्षा के प्रति जबरदस्त लगन था। यह वह समय था जब समाज में स्त्री-शिक्षा को लेकर कोई चर्चा तक नहीं होती थी। लड़कियों की शिक्षा को 'बुरा काम' माना जाता था। सावित्रीबाई का सौभाग्य रहा जिन्हें जोतिबा फुले जैसे महान समाजसुधारक पति रूप में प्राप्त हुए। पति ने पहले उन्हें शिक्षित किया, तब सावित्रीबाई ने पूरे स्त्री समाज को शिक्षित करने का प्रण लिया। जोतिबा ने 1848 (14 जनवरी) में देश का प्रथम बालिका स्कूल खोला, और इसकी पहली अध्यापिका, स्वाभाविक तौर पर, सावित्रीबाई को बनाया। सावित्रीबाई ने अकेले दम पर यह विद्यालय चलाया। उन्हें इसकी 'सजा' मिली कंकड़-पत्थर की मार खाकर। उन पर कीचड़ और गोबर फेंके गए। लेकिन सावित्रीबाई ने हार नहीं मानी। वह लड़कियों को पढ़ाई के साथ-साथ खेल-कूद के लिए भी प्रोत्साहित करतीं। उनके प्रयासों का सार्थक परिणाम निकला। अभिभावक अपनी बेटियों को उनके विद्यालय में भेजने लगे।

जोतिबा ने 1852 में दलितों और अछूत बच्चों के लिए भी स्कूल खोला। दलितोत्थान की दिशा में यह मील का पत्थर था।

सावित्रबाई ने पति के नक्शेकदम पर चलकर पढ़ाई के साथ-साथ जातिप्रथा, दहेज प्रथा और विधवा समस्या पर भी काम किया। वह गरीब लड़कियों का सामूहिक विवाह करवातीं। उन्होंने दलितों के लिए अपने घर का कुआँ खोल दिया। वह एक कवयित्री भी थीं और उनके दो काव्य संग्रह छपे। 10 मार्च, 1897 को प्लेग पीड़ितों की सेवा के दौरान स्वयं भी प्लेग पीड़िता होकर मृत्यु को प्राप्त हुईं। लेकिन अंधकार युग में स्त्री चेतना की जोत जलाकर उन्होंने क्रांतिकारी काम किया। हम उन्हें नमन करते हैं।

पूरा जिला स्त्रियों की कमान में!

छत्तीसगढ़ राज्य का महासमुंद जिला 'सर्व स्त्री अधिकारी' वाला देश का पहला जिला है। यहाँ हर उच्च पदों पर महिला अधिकारी तैनात हैं। जिले की कलेक्टर, एसपी, जज, जिला पंचायत सीईओ, महिला एवं बाल विकास अधिकारी, एक्साइज ऑफिसर, पीआरओ–सब महिलाएँ हैं।

तुम भी जो साथ आओ लड़ लेंगे साथ मिलकर
बदलेगा ये जमाना पढ़ लें जो साथ मिलकर।

पंडिता रमाबाई : स्त्री-शिक्षा की मशाल

रमाबाई का जन्म सन् 1858 में हुआ था। यह वह समय था जब स्त्री-शिक्षा के बारे में कोई सोच भी नहीं सकता था। अधिकतर हिंदू परिवारों में यह मान्यता थी कि 'अगर स्त्री पढ़ने लगेगी तो वह विवाह के तुरंत बाद विधवा हो जाएगी।'

ऐसी सोच के विषम काल में जन्म लेकर भी रमाबाई न केवल स्वयं पढ़ी बल्कि स्त्री-शिक्षा और स्त्रियों को आत्मनिर्भर बनाने के बेहद जोखिमभरे काम में स्वयं को झोंक दिया। महाराष्ट्र के एक परंपरावादी सवर्ण परिवार में जन्म लेने वाली रमाबाई को पिता ने संस्कृत की शिक्षा दी। आठ वर्ष की आयु में रमाबाई की शिक्षा आरंभ हुई। रमा जब कैशोर्य में थी तभी उनके माता-पिता का देहांत हो गया। ऐसे में अनाथ रमाबाई भटकते-भटकते अपने भाई के साथ कलकत्ता पहुँच गई। पढ़ी-लिखी होने के कारण उन्हें कोई आश्रय नहीं देता था। लेकिन कलकत्ता में 'नवजागरण' हो चुका था और राममोहन राय, विद्यासागर आदि के कारण वहाँ 'नए विचारों' को सम्मान से देखा जाता था। यहाँ रमाबाई को 'सरस्वती' और 'पंडिता' की उपाधि मिली, अब वे पंडिता रमाबाई सरस्वती हो गईं। उन्होंने तत्कालीन हिंदू समाज की अवहेलना कर एक शूद्र से विवाह कर लिया। मगर जब वह 23 साल की थीं तभी, एक पुत्री के जन्म के बाद, वह विधवा हो गईं।

अब वह कलकत्ता से वापस पूना आईं। यहाँ उन्होंने आर्य महिला समाज की स्थापना की और स्त्री अधिकारों के लिए संघर्ष करना आरंभ किया। इस कार्य में उन्हें जस्टिस रानाडे आदि सरीखे विद्वत्जनों का साथ मिला। वे भारत में महिला डॉक्टरों और अध्यापिकाओं की प्रबल आवश्यकता महसूस करती थीं। उन्होंने स्वयं अँग्रेजी भाषा तथा चिकित्सा ज्ञान का अध्ययन किया।

रमाबाई के कार्यों का भारत का बौद्धिक तबका समर्थन करता था, साथ ही, ईसाई मिशनरी भी उनसे प्रभावित थे। वह जाति प्रथा की प्रबल विरोधी थीं। उनका शिक्षा प्राप्त करना एवं स्त्री-शिक्षा का प्रचार-प्रसार तत्कालीन हिंदू समाज की निगाह में 'अधर्म' की तरह खटकता था। रमाबाई ने ईसाई धर्म अपना लिया। वह 1883 व 1886 में क्रमशः इंग्लैंड और अमरीका गईं। वहाँ स्त्री-शिक्षा एवं जागरूकता पर अनेक व्याख्यान दिए। लौटकर आईं तो बंबई में विधवाओं के संरक्षण के लिए 'शारदा सदन' खोला। उन्हें जीविका के लिए नर्सिंग और अध्यापन का प्रशिक्षण दिया। 1897 में पूना में अकाल और प्लेग के समय उन्होंने पीड़ित स्त्री व बच्चों के लिए भोजन, वस्त्र आदि का प्रबंध किया, साथ ही, उन्हें शिक्षित भी करती थीं। वे स्त्रियों को छापाखाना, बढ़ईगिरी, सिलाई, बुनाई-कढ़ाई एवं बागवानी के काम का भी प्रशिक्षण दिलवातीं। अनेक कारणों से हिंदू समाज उनसे नाराज था। रमाबाई के स्त्री-शिक्षा एवं सशक्तीकरण के आज से सवा सौ साल पहले के कार्य हमें आज भी प्रेरणा देते हैं। सन् 1922 में रमाबाई का निधन हो गया।

गाँधी जी की दांडी यात्रा, 12 मार्च

नमक बनाने के आंदोलन की शुरुआत 'दांडी मार्च' से हुई थी। गाँधी जी ने अपने 76 सत्याग्रही कार्यकर्ताओं के साथ साबरमती आश्रम से 200 मील दूर दांडी यात्रा की शुरुआत की थी। यात्रा का वह दिन था 12 मार्च, 1930। इस यात्रा पर सोहनलाल द्विवेदी की अँग्रेजी सत्ता के विरुद्ध हुंकार इस तरह थी–

या तो भारत होगा स्वतंत्र, कुछ दिवस रात के प्रहरों पर
या शव बनकर लहरेगा शरीर मेरा, समुद्र की लहरों पर,
हे शहीद, उठने दे अपना फूलों भरा जनाजा!

एक-एक कौर में मिलाया हुआ वह कौन-सा जाप था, जिसे तुम लगातार दुहराती रहीं? संतों-फकीरों का रोना-धोना देकर तुमने मुझे क्यों सिर्फ डरना ही सिखाया? मेरी माँ, मैं नहीं डरूँगी! मैं तुम्हारी तरह नहीं बनूँगी!

जा, तेरे स्वप्न बड़े हों!
भावना की गोद से उतरकर
जल्द पृथ्वी पर चलना सीखें
चाँद-तारों-सी अप्राप्य सच्चाइयों के लिए
रूठना-मचलना सीखें
हँसें
मुस्कुराएँ
गाएँ
हर दिए की रोशनी देखकर ललियाएँ
उंगली जलाएँ
अपने पाँवों पर खड़े हों।
जा, तेरे स्वप्न बड़े हों!

–दुष्यंत कुमार

जो रचती है
संसार
लेने दें
उसको भी आकार।

कन्या भ्रूण हत्या

चाहे मुझको प्यार न देना,
चाहे तनिक दुलार न देना,
कर पाओ तो इतना करना
जन्म से पहले मार न देना।

क्या कसूर है मेरा,
मुझ पर क्यों करते हो वार
मैं बेटी हूँ, मुझको भी है
जीने का अधिकार।

(पोस्टर कविता)

अंतरराष्ट्रीय महिला दिवस, 8 मार्च के अवसर पर काव्यमयी प्रस्तुति

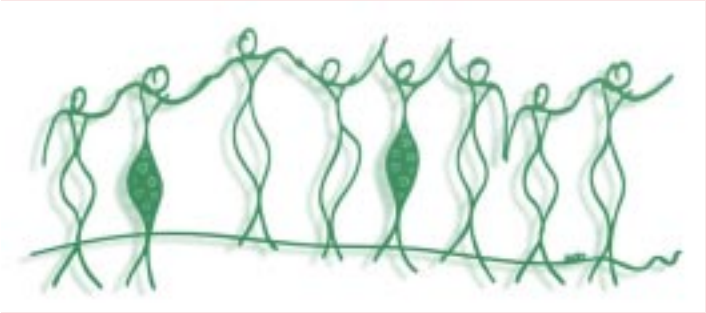

इरादे कर बुलंद

कमला भसीन

इरादे कर बुलंद अब रहना शुरू करती तो अच्छा था
तू सहना छोड़कर कहना शुरू करती तो अच्छा था।

सदा औरों को खुश रखना बहुत ही खूब है लेकिन
खुशी थोड़ी तू अपने को भी दे पाती तो अच्छा था।

दुखों को मान किस्मत हारकर रहने से क्या होगा
तू आँसू पोंछकर अब मुस्करा लेती तो अच्छा था।

ये पीला रंग, लब सूखे सदा, चेहरे पे मायूसी
तू अपनी इक नई सूरत बना लेती तो अच्छा था।

तेरी आँखों में आँसू हैं तेरे सीने में हैं शोले
तू इन शोलों में अपने गम जला लेती तो अच्छा था।

है सर पर बोझ जुल्मों का तेरी आँखें सदा नीची
कभी तो आँखें उठा तेवर दिखा देती तो अच्छा था।

*तेरे माथे पे ये आँचल बहुत ही खूब है लेकिन
तू इस आँचल को इक परचम बना लेती तो अच्छा था।

*(*मशहूर शायर मजाज की ग़ज़ल का शेर)*

हँसती है बेटी

सुरजीत सिंह जोबन, दिल्ली

हँसती तो मधुमास है बेटी
प्यार भरा एहसास है बेटी।

घर की प्यारी धूप बन जाती
रहती आस-पास है बेटी।

मेरी हर आशा उससे है
कभी न होती निराश है बेटी।

शीतलता को देने वाली
बन जाती आकाश है बेटी।

सागर से भी गहरी है वह
परिवार का उल्लास है बेटी।

घर की सुख-समृद्धि उससे
'जोबन' का दिन-मास है बेटी।

पढ़ तू किताब, बेटी

नास्तिक, महू, इंदौर, म.प्र.

सुबह-शाम पढ़ तू किताब, बेटी
पूरा होगा तेरी तरक्की का ख्वाब, बेटी।

जोड़, गुणा, भाग से जोड़ ले तू नाता
समझ में आ जाएगा सारा हिसाब, बेटी।

सवालों को करना तू सरलता से हल
अकड़कर नहीं देना कभी जवाब, बेटी।

वक्त की कसौटी पर उतरना तू खरा
मिलेंगे तुझे कई तरह के खिताब, बेटी।

बहाना मीठी वाणी का उज्ज्वल झरना
ये दुनिया कहेगी तुझे लाजवाब, बेटी।

आँगनवाड़ी खोलना, बाँटना तू अक्षर-ज्ञान
तू जरूर बनेगी शिक्षा का आफताब, बेटी।

बन तू भी सुनीता विलियम्स की तरह
अंतरिक्ष में तू भी होगी कामयाब, बेटी

ज्ञान की जोत जला, विज्ञान के फूल खिला
मिलेंगे तुझको अच्छे-अच्छे जॉब, बेटी

पराई पीड़ाओं को देखकर पिघलना तू
इससे अच्छा नहीं होगा कोई सबाब, बेटी

'नास्तिक' की नसीहतों को कर ले याद
दुनिया झुककर करेगी तेरा आदाब, बेटी।

अंतरराष्ट्रीय महिला दिवस, 8 मार्च के अवसर पर काव्यमयी प्रस्तुति

बेटियाँ

प्रो. शरद नारायण खरे
मंडला, म.प्र.

बेटियाँ कोमल लताएँ
बेटियाँ पावन हवाएँ।
बेटियाँ हैं गान-मंगल
बेटियाँ शुभकामनाएँ।
बेटियाँ हैं ईश-वंदन
बेटियाँ जैसे दुआएँ।
बेटियाँ हैं गीत जैसी
बेटियाँ रोचक कथाएँ।
बेटियाँ सूरज के जैसी
बेटियाँ चंदा-कलाएँ।
फूल झरते आसमाँ से
बेटियाँ जब मुस्कराएँ।
बेटियाँ माँ शारदा हैं
बेटियाँ सीता कहाएँ।
बेटियाँ बेटों से बढ़कर
यह 'शरद' सब मान जाएँ।

बिटिया

अशोक 'आनन', मक्सी, शाजापुर, म.प्र.

रोज सवेरे रिक्शा आती
बिटिया जिसमें शाला जाती।
शाला में वह जाकर पढ़ती
पढ़-पढ़कर वह आगे बढ़ती।
जीवन उसका बहुत सुनहरा
उससे रोशन देश हमारा।
वही देश की आज शान है
कल का अपना देश महान है।

नारी

पूनम, लखनऊ, उ.प्र.

अबला नहीं आज तो
सशक्त है नारी
स्वाभिमान स्वावलंबन से
भरपूर है नारी।
चहारदीवारी के भीतर
और बाहर भी
अपने अस्तित्व के साथ
संपूर्ण है नारी।
कहीं पत्थर की मूरत तो
कहीं अहसास कोमल भी
कहीं शोला कहीं शबनम
कहीं परवाज है नारी।
जो छेड़े दिल के तार
ऐसी साज है नारी
हर रूप में अपने
नया अंदाज है नारी।
कई महान विभूतियों में
से एक है नारी
बूझ न पाए देव मुनि
ऐसी राज है नारी।
फिर भी क्यूँ नहीं हम
मानने को हैं तैयार
आज तो समाज का एक
स्तंभ है नारी।

अब तो बहुत बढ़ रही बेटियाँ

डॉ. महमूद अली 'बेगाना', आगरा, उ.प्र.

स्कूल मदरसों में अब पढ़ रहीं बेटियाँ
अपने हक के लिए अड़ रहीं बेटियाँ।
एक जमाना, न जाती थी स्कूल में
उनके माँ-बाप थे न जाने किस भूल में
उन खयालों से अब लड़ रहीं बेटियाँ।
एस.पी. बेटियाँ व डी.एम. बेटियाँ
सी.एम. बेटियाँ व पी.एम. बेटियाँ
मुस्तकबिल मुल्क का बन रही बेटियाँ।
सरहदों की हिफाजत या अंदर की हो
जंगे मैदाँ की या बात बंकर की हो
हर जगह क्या नहीं कर रहीं बेटियाँ।

बेटियाँ

कौशल्या अग्रवाल, देहरादून, उत्तराखंड

आज पढ़-लिखकर उठ गई हैं, ये
आलोक बिखेर रही बेटियाँ
नहीं लगता कुछ भी मुश्किल अब
हो गई सक्षम समर्थ बेटियाँ
नहीं लेने को देने हित बढ़ रही
खुशियाँ जीवन में भर रही बेटियाँ
छू लिया है नभ का तारामंडल
गगन में विचर रही हैं बेटियाँ।

मैं अकेली ही लड़ूँगी
अपनी लड़ाई
काम आएगी बहुत
मेरी पढ़ाई।
स्मृति जोशी

बेटियाँ, बड़े नसीब से
बेटियाँ, बड़े हबीब से
नेह का नाता जोड़ती हैं
बेटियाँ, बड़े करीब से।
आनंद बिल्थरे, बालाघाट, म.प्र.

शोषित नारी, पीड़ित नारी
राष्ट्र का अपमान है
वही राष्ट्र आगे बढ़ता है
जहाँ नारी का सम्मान है।
रूपनारायण काबरा, जयपुर, राज.

अब कहो न कुछ मजबूरी है
नारी-शिक्षा बहुत जरूरी है।

मत कहो इसे तुम अबला अब
शिक्षित नारी है सबला अब।

बेटियाँ हमारे घर-आँगन का ऐसा फूल हैं जो हमारे जीवन में रंग ही नहीं बल्कि उमंग और सुगंध भी बिखेरती हैं।
कृष्णा तीरथ, महिला एवं बाल विकास राज्य मंत्री

पाठकीय प्रतिक्रिया

- **सा. सं. : फरवरी 2013 :** 'पापा, मुझे स्कूल जाना अच्छा लगता है' विषयक लघु आलेख उपयोगी है। कविताएँ अच्छी लगीं।
  सुरेश 'आनन्द', रतलाम, म.प्र.
- पत्रिका बहुत ही सुंदर व आकर्षक है। रचनाएँ उत्तम। सबके लिए उपयोगी है यह। हर अंक पढ़ने की लालसा है।
  प्रकाश भानु महतो, नेंगटासाई, सरायकेला, झारखंड
- परिवार के सभी सदस्य बड़े चाव से पढ़ते हैं **साक्षरता संवाद,** क्योंकि इसके प्रत्येक अंक में नई-नई जानकारी और उच्च स्तरीय लेख, कविता आदि रहती है। **दुर्गा प्रसाद शर्मा,** बुलंदशहर, उ.प्र.
- लघु आलेख, छोटी-छोटी जानकारियाँ, कविताएँ, क्षणिकाएँ साक्षरता के प्रति जागरूक करती हैं। साक्षरताप्रेमी के अलावा विद्यार्थियों के लिए भी संजीवनी बूटी है यह पत्रिका। संपादन, मुद्रण, चित्र-प्रस्तुति लाजवाब है।
  डॉ. पी.आर. वासुदेवन 'शेष', चेन्नई, तमिलनाडु
- मातृभाषा दिवस पर आलेख व कविता (केदारनाथ सिंह) अच्छी लगी। जन्म एवं पुण्य तिथियों पर पुरोधाओं को याद करना अच्छी परंपरा है। काव्य प्रस्तुति एवं नवसाक्षरोपयोगी अन्य सामग्री अच्छी एवं उपयोगी हैं। पाठकीय प्रतिक्रिया पत्रिका की लोकप्रियता का आईना है। **आनंद बिल्थरे,** बालाघाट, म.प्र.
- **'साक्षरता संवाद'** ने एक क्रांति को जन्म दिया है जो अपढ़ जनसाधारण के हित में एक मशाल बनकर प्रकाशित हो रही है। यह मशाल विद्या की ज्योति का रूप लेकर उन बस्तियों में बढ़ रही है जिनमें जन्म-जन्मांतर से अज्ञान का अंधकार पसरा बैठा था। इस पत्रिका में ऐसी चुंबकीय शक्ति है जो अनपढ़ बच्चों-बूढ़ों में विद्या ग्रहण करने का आकर्षण पैदा करती है। पत्रिका के हर अंक में रुचिपूर्ण लघुकथा, सहज-संदेशपरक कविताएँ, महापुरुषों की उक्तियाँ एवं समसामयिक के साथ-साथ ऐतिहासिक संदर्भपरक, ज्ञानवर्धक जानकारियाँ होती हैं, जो पत्रिका को उपयोगी बना देती हैं। **हर्ष कुमार 'हर्ष',** पटियाला, पंजाब
- मुझे अपने मित्र से आपके यहाँ से प्रकाशित **सा. संवाद** के बारे में पता चला। पिछले अंक में नई दिल्ली विश्व पुस्तक मेले के बारे में आपने उपयोगी जानकारी दी। मैंने यह अंक पढ़ा तो मुझे भी **सा.सं.** मँगवाने की इच्छा पैदा हुई। मेरी किताबों में विशेष रुचि है, विशेषकर साहित्य व इतिहास विधा में। **सा.सं.** में दी जाने वाली जानकारी मुझे पठनीय व रुचिकर लगी है। कृपया अंक हर बार भेजें। **मोहन लाल,** नाभा, पटियाला, पंजाब
- साक्षरता गीत के माध्यम से साक्षरता प्रसार का आपका प्रयास स्तुत्य है। 'सब पढ़े सब बढ़े' को चरितार्थ करता आपका यह उपक्रम सार्थक और स्वागत योग्य भी है।
  साक्षरता संवाद बने, संवादों का मार्ग
  सत्य मार्ग का अनुकरण, विद्या विनयी मार्ग।
  कृष्णदेव चतुर्वेदी, भोपाल, म.प्र.
- **सा. संवाद** निरंतर प्राप्त हो रहा है। ज्ञानवर्धक सामग्री से मन पुलकित हो रहा है। बधाई। **राकेश 'चक्र',** मुरादाबाद, उ.प्र.
- **सा.सं.** अपने लघु कलेवर में भी बेहद रोचक, ज्ञानवर्धक एवं उपयोगी है। आपका यह कार्य सराहनीय है।
  महाकवि अवधेश, झाँसी, उ.प्र.
- 'साक्षरता संवाद' की / चर्चा होती खूब
  उगा रहे नव-ज्ञान की / पावन, सुंदर दूब
  पुस्तक से अनुराग का / रचा श्रेष्ठतम भाव
  इसीलिए हर गाँव में / पढ़ने का है ताव।
  प्रो. शरद नारायण खरे, मंडला, म.प्र.

रचनाकार कृपया ध्यान दें : **कृपया पत्रिका के अनुकूल शिक्षा, साक्षरता, पुस्तक एवं पठन-पाठन से संदर्भित रचनाएं ही भेजें–प्रेरक, उद्‌बोधक। साफ एवं पठनीय शब्दों में लिखें, रचनाएं संक्षिप्त भेजें। बाल रचनाएं कृपया ट्रस्ट की 'पाठक मंच बुलेटिन' पत्रिका में भेजें।** *–संपा.*

आखिर क्यों?

कान खोलकर सुन लो पिता जी, मैं शादी नहीं करूँगी। अगर करना ही है तो भैया की करो, फेल तो भैया ही हुआ है न! अगर मुझसे घर का काम करवाना है तो भैया से भी करवाइए, हमें समान अधिकार जो हैं! मेरे साथ ही ये भेद-भाव क्यों? मेरा तिरस्कार क्यों? क्या इसलिए कि मैं एक लड़की हूँ? अपनी अंतरात्मा से पूछिए पिता जी, मेरे साथ ये भेदभाव क्यों? क्या ये सब जो आप कर रहे हैं उचित है? समाज की रूढ़ियों में बँधे हुए आप मुझे जीवन भर के लिए अपमान, उपेक्षा, तिरस्कार के घने जंगल में क्यों छोड़ रहे हैं...आखिर क्यों?

आखिर क्यों, ऐसा क्यों?...

चुप हो जा लक्ष्मी, वाकई समाज रूढ़ियों के बँधन में बँधा है। मैं तेरे जीवन को अंधकार के घने गड्ढे में धकेल रहा था। मैं तुझे पढ़ाऊँगा; तेरी जो इच्छा है उसे जरूर पूरा करूँगा।

('बेटी करे सवाल' शीर्षक 'एकलव्य' प्रकाशन से साभार)

बाल आग्रह

अलका सक्सेना, धौलपुर, राजस्थान

पोथी कलम दवात मँगा दे
मैं तो पढ़ने जाऊँगी भइया
पढ़-लिखकर मैं बनूँ कलक्टर
कहलाऊँगी अफसर बिटिया।
बालेपन मत ब्याह रचाना
घर-गृहस्थी का न बोझ लादना
शाला की घंटी मुझे बुलाती
पढ़ने जाती देखो, सब सखियाँ।
बापू अम्मा तुम भी पढ़ लो
शिक्षा की है जोत जगा लो
पढ़ो और पढ़ाओ सबको
विद्या की लो ओढ़ चुनरिया।
जन-जन हो साक्षर भारत का
अनपढ़ रहे न अब जन कोई
चली बयार साक्षरता की
आखर मेघ बरसता भइया।

अक्षर

कौशल्या अग्रवाल

पढ़ो और पढ़ाओ
निरक्षर को अक्षर
अक्षर से जीवन-ज्ञान मिले
जीवन-ज्ञान मिले, सम्मान मिले
उठ जाता नर, अक्षर से
जीवन-अभिमान मिले
अक्षर से अक्षर को गढ़
मानव को नई पहचान मिले।

देहरादून, उत्तराखंड

ज्ञान गुलाल
अज्ञानता की होली
चलो, जलाएँ।

आनंद बिल्थरे
बालाघाट, म.प्र.

संदर्भ :
विश्व
वन
दिवस :
21 मार्च

बन जाएँ हम सभी भगीरथ
जल की रक्षा करने को
पेड़ लगाकर वर्षा लाएँ
धरती पर जल भरने को।

रूपनारायण काबरा, जयपुर, राजस्थान

एवं
विश्व
जल
दिवस :
22 मार्च

पोंछकर अश्क अपनी आँखों से मुस्कराओ तो कोई बात बने
सर झुकाने से कुछ नहीं होगा सर उठाओ तो कोई बात बने।

उजाले की किरण

कुन्ती

हर स्त्री को बचाकर रखना चाहिए
अपने पास कुछ ऐसा खास
जो आ सके
आड़े वक्त में उसके काम
ठीक धरती की तरह
लौटाने की क्षमता के साथ
कूड़े को भी
ऊर्जा में बदलने की शक्ति के साथ
ताकि जब भी कोई तुमसे मिले
तो उसे लगे कि उसने
एक उजाले की किरण को छुआ है।

शहीदों की मजारों पर लगेंगे हर बरस मेले
वतन पर मरने वालों का यही बाकी निशाँ होगा।

संदर्भ : शहीदी दिवस, 23 मार्च —**रामप्रसाद बिस्मिल**

R. N.I. No. 65414/96
Postal Regd. No. DL-SW-1/4078/2012-14
Licence to post without prepayment
L. No. U(SW) 22/2012-14
Mailing date 25/26 same month
Date of publication 15/3/2013

नेशनल बुक ट्रस्ट साक्षरता संवाद पत्रिका के स्वामित्व संबंधी घोषणा

प्रपत्र IV

(कृपया नियम-8 देखें)

प्रकाशन स्थान	:	नई दिल्ली
प्रकाशन की अवधि	:	मासिक
मुद्रक का नाम	:	सतीश कुमार
क्या भारत के नागरिक हैं	:	हाँ
पता	:	नेहरू भवन 5 इंस्टीट्यूशनल एरिया, फेज-II वसंत कुंज, नई दिल्ली-110070
संपादक	:	बलदेव सिंह 'बद्दन'
क्या भारत के नागरिक हैं	:	हाँ
पता	:	नेहरू भवन 5 इंस्टीट्यूशनल एरिया, फेज-II वसंत कुंज, नई दिल्ली-110070
समाचार-पत्र पर स्वामित्व रखने वाले व्यक्ति और साझीदार अथवा पूरी पूंजी के एक प्रतिशत से अधिक के शेयरधारियों के नाम एवं पते	:	नेशनल बुक ट्रस्ट, इंडिया नेहरू भवन 5 इंस्टीट्यूशनल एरिया, फेज-II वसंत कुंज, नई दिल्ली-110070

मैं, सतीश कुमार, एतद् द्वारा घोषणा करता हूँ कि मेरी जानकारी एवं विश्वास के अनुसार ऊपर दिए गए विवरण सही हैं।

सतीश कुमार

दिनांक : 01 मार्च, 2013 (प्रकाशक का हस्ताक्षर)

'साक्षरता संवाद' के अंतिम दो पृष्ठ 7 और 8, नवसाक्षरों के लिए हैं। इसे अलग करके अन्य पठन सामग्री के साथ रखा जा सकता है।

संपादक : **बलदेव सिंह 'बद्दन'**
कार्यकारी संपादक : **दीपक कुमार गुप्ता**
उत्पादन सहयोग : **नरेन्द्र कुमार**

साक्षर भारत

नेशनल बुक ट्रस्ट, इंडिया
नेहरू भवन, 5 इंस्टीट्यूशनल एरिया, फेज-II
वसंत कुंज, नई दिल्ली-110070
ई-मेलः nbtindia@nbtindia.org.in
वेबसाइट : www.nbtindia.gov.in

पाठकों से अनुरोध है कि वे **साक्षरता संवाद** के बारे में अपने विचार संपादक को लिखें।

नेशनल बुक ट्रस्ट, इंडिया की ओर से सतीश कुमार द्वारा मुद्रित एवं प्रकाशित तथा पुष्पक प्रेस प्रा.लि., 203-204, डी.एस.आई.डी.सी. शेड, फेज-I, ओखला इंडस्ट्रियल एरिया, नई दिल्ली-110020 से मुद्रित और नेशनल बुक ट्रस्ट, इंडिया, नेहरू भवन, 5 इंस्टीट्यूशनल एरिया, फेज-II, वसंत कुंज, नई दिल्ली-110070 से प्रकाशित। संपादक बलदेव सिंह 'बद्दन'।

एस.एस. इंटरप्राइजेज, प्रथम तल, जी.जी.-1/36बी, विकासपुरी, नई दिल्ली-110018 से टाइपसेट।

भारत सरकार के सेवार्थ

डाक वापसी की दशा में कृपया इस पते पर वापस करें :
नेशनल बुक ट्रस्ट, इंडिया, नेहरू भवन, 5 इंस्टीट्यूशनल एरिया, फेज-II, वसंत कुंज, नई दिल्ली-110070